

SHRI SHARATH KAMAL ACHANTA

Shri Sharath Kamal Achanta is a renowned name in the sport of Table Tennis in India. He has been the flag-bearer of Indian Table Tennis since 2002, winning over 60 international medals in the span of 16 years, of which, 9 are Commonwealth Games medals and 2 Asian Games medals.

2. Born on July 12, 1982, in a humble yet passionate table tennis family with his father and uncle as coaches, Shri Achanta started playing table tennis at the tender age of 4 and followed an extremely rigorous regime balancing both his education and the sport. He then started regularly representing the state of Tamil Nadu at the National level till the year 2000. At the age of 16, Shri Achanta turned into a professional paddler. It was in the year 2002 that the 20-year-old played his first National Championship finals, an event that led him to embark on a glorious Table Tennis career. The very next year, he won his first National Championship title. He became the first Indian to win the Commonwealth Championships in 2004 and went on to represent India at the 2004 Athens Olympic Games. Continuing the winning streak at Melbourne Commonwealth Games 2005, Shri Achanta stuck gold in both Men's Singles and Team Championships, again becoming the first Indian to win gold medals al the Commonwealth Games.

3. In 2007, Shri Achanta entered the top 100 of the world rankings after playing the finals of Men's Singles at the Indian Open world ranking tournament. He became a two-time Olympian when he represented the country at the Beijing Olympic Games of 2008. During the 2010 Commonwealth Games held at New Delhi, he won India's first ever gold medal in the Men's Doubles category partnering with Subhajit Saha, in addition to winning 2 bronze medals in Men's Singles and Teams events. In the same year, he created history by winning the Men's Singles titles at both the US Open and Egypt Open, making him the first Indian to win in a World Ranking tournaments. The 2014 Commonwealth Games at Glasgow saw him win a Silver medal in the Men's Doubles with a different partner this time, Amalraj Anthony.

4. At 2015 World Championships during the second-round of the match against World No. 35, Shri Achanta suffered a severe injury to his hamstring. Despite the accident, he managed to win the match but unfortunately had to forfeit the next round. With that victory, he became the highest ever ranked Indian at number 32 in the World but the injury took 4 months to heal after an operation, resulting in nearly 8 months before he returned to the international circuit. His major comeback was during the 2016 World team championships held at Malaysia, where he successfully led the Indian team to win their first gold medal in the second division. This feat saw India getting promoted to the Championship division for the very first time. Following the historic victory, Shri Achanta qualified for his 3rd Olympic Games at the Asian qualification tournament held in Hong Kong and represented India at the Rio Olympic Games 2016. His 7th and 8th National Championship Titles in 2017 and 2018 have proved that his comeback is stronger than ever. In the recently concluded Gold Coast Commonwealth Games (April 2018), he has once again led the team to win a Gold medal and proved his mettle by winning a gold in the Men's Team event, a silver in Men's Doubles and a bronze in the Men's Singles event. His career's best performance was seen at the 18thAsian Games 2018 at Jakarta when he led the Indian team to win a historic bronze medal which was the first medal in Table Tennis for India and followed it by winning another bronze medal in the Mixed Doubles event, thus becoming the only Indian to have won 2 Asian Games medals.

5. Shri Achanta has received various honours and awards including Arjuna Award in 2005.



श्री शरथ कमल अचंत

श्री शरथ कमल अचंत भारत में टेबल टेनिस के जगत का एक सुप्रसिद्ध नाम है। आप 2002 से भारतीय टेबल-टेनिस के ध्वजवाहक रहे हैं, 16 वर्ष की अवधि में आपने 60 से अधिक अंतर्राट्रीय पदक प्राप्त किए हैं, जिनमें 9 राष्ट्रमंडल खेल पदक तथा 2 एशियाई पदक शामिल हैं।

2. आपका जन्म 12 जुलाई, 1982 को एक ऐसे सादगीपूर्ण परिवार में हुआ जिनका टेबल टेनिस में प्रगाढ़ प्रेम था, आपके पिता तथा (चाचा) प्रशिक्षक थे, आपने 4 वर्ष की नाजुक उम्र से टेबिल टेनिस खेलना शुरू किया और अपनी शिक्षा तथा खेल के बीच सामंजस्य बैठाते हुए आपने कड़े प्रशिक्षण का अनुगमन किया। इसके पश्चात्, आपने वर्ष 2000 तक नियमित रूप से राष्ट्रीय स्तर पर तमिलनाडु राज्य का प्रतिनिधित्व किया। 16 वर्ष की आयु में आप एक पेशेवर खिलाड़ी बन गए। वर्ष 2002 में 20 वर्ष की आयु में आपने अपना पहला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप फाइनल खेला, वह प्रतियोगिता जिसने आपको टेबल टेनिस के शानदार कैरियर के शिखर पर आरुढ़ कर दिया। उससे अगले ही वर्ष, आपने अपना पहला राष्ट्रीय चैम्पियनशिप खिताब जीता। आप 2004 में राष्ट्रमंडल चैम्पियनशिप जीतने वाले पहले भारतीय थे और आपने 2004 के एथेंस ऑलंम्पिक खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। मेलबोर्न राष्ट्रमंडल खेल 2005 में भी जीत का सिलसिला जारी रहा, आपने पुरूष एकल तथा टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता, एक बार फिर राष्ट्रमंडल खेल में स्वर्ण पदक जीतने वाले आप पहले भारतीय बने।

3. वर्ष 2007 में, आप इंडियन ओपन वर्ल्ड रैंकिग टूर्नामेंट में पुरुष एकल प्रतियोगिता का फाइनल खेलने के पश्चात् विश्व रैंकिंग में उच्चतम 100 में प्रवेश कर गए। आप 2008 के बीजिंग ऑलंपिक खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करते हुए दो बार ओलिम्पियन बने। नई दिल्ली में हुए 2010 राष्ट्रमंडल खेलों के दौरान, आपने पुरूष एकल तथा टीम स्पर्धा में दो कांस्य पदक जीतने के साथ, शुभाजित साहा के साथ सहभागिता में पुरुष युगल श्रेणी में भारत का पहला स्वर्ण पदक जीता। इसी वर्ष आपने यू एस ओपन और मिस्र ओपन, दोनों में पुरुष एकल स्पर्धा जीतकर इतिहास रच दिया। आप विश्व रैंकिग टूर्नामेंट जीतने वाले पहले भारतीय बने। 2014 में ग्लासगो में हुए राष्ट्रमडंल खेलों में आपने इस बार अलग साथी अमलराज एंथनी के साथ पुरुण युगल श्रेणी में रजत पदक जीता ।

4 विश्व चैम्पियनशिप 2015 के दौरान, वर्ल्ड न. 35 के विरूद्ध खेलते हुए खेल के दूसरे चरण के दौरान आपको घुटने की पीछे की नस में गंभीर चोट आई। हादसे के बावजूद भी, आप मैच जीत गए परन्तु दुर्भाग्यवश आप अगला चरण नहीं खेल पाए। इस जीत के साथ आप विश्व में 32 वें स्थान पर आकर उच्चतम स्थान पाने वाले पहले भारतीय बने किंतु आपरेशन के पश्चात् चोट को ठीक होने में 4 माह लग गए, जिसके कारण आपको अंतर्राट्रीय खेलों में वापसी करने में लगभग 8 माह लग गए। 2016 के दौरान, मलेशिया में आयोजित वर्ल्ड टीम चैम्पियनशिप के दौरान, आपकी शानदार वापसी हुई जहां आपने दूसरी श्रेणी में सफलापूर्वक भारतीय टीम को उसका पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इस जीत के साथ भारत चैम्पियनशिप श्रेणी में पहली बार उभर कर आया। इस एतिहासिक जीत के बाद, आप हांग कांग में आयोजित एशियन क्वालिफिकेशन टूर्नामेंट में अपने तीसरे ओलिंपिक खेल के लिए चुने गए और रियो ऑलंपिक खेल 2016 में आपने भारत का प्रतिनिधित्व किया । 2017 और 2018 में आपके 7 वें और 8 वें नेशनल चैम्पियनशिप पदक ने यह साबित कर दिया कि आपकी वापसी पहले से कहीं अधिक जानदार रही। हाल ही में आयोजित गोल्ड कोस्ट राष्ट्रमंडल खेल (अप्रैल 2018) में एक बार फिर आपने टीम को स्वर्ण पदक दिलाया और पुरुष टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक, पुरुष युगल में रजत पदक और पुरुष एकल स्पर्धा में कास्य पदक जीतकर आपने अपना जोश और उत्साह साबित किया। जकार्ता में हुए 18 वें एशियाई खेल 2018 में आपके कैरियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देखा गया जब आपने भारतीय टीम को ऐतिहासिक कास्य पदक दिलाया जो कि भारत के लिए टेबल टेनिस में पहला पदक था और इसके पश्चात् मिश्रित युगल प्रतियोगिता में एक और कास्य पदक जीता और आप एकमात्र भारतीय बने जिसने 2 एशियाई खेल पदक जीते।

5. आपको 2005 में अर्जुन पुरस्कार सहित कई सम्मान तथा पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।